# राष्ट्रीय पोषण सप्ताह

### चर्चा में क्यों?

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (Ministry of Health and Family Welfare) द्वारा 1 सितिंबर से 7 सतिंबर, 2017 तक 'राष्ट्रीय पोषण सप्ताह' (National Nutrition Week) मनाया जा रहा है।

### वषिय

इस वर्ष राष्ट्रीय पोषण सप्ताह का वषिय है - "नवजात शशि एवं बाल आहार प्रथाएँ : बेहतर बाल स्वास्थ्य" (Optimal Infant & Young Child feeding Practices - IYCF : Better Child Health)।

### उद्देश्य

इस अभयिान का मुख्य उद्देश्य बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा हेतु उचति पोषण के महत्त्व के वषिय में जन जागरूकता पैदा करना है। आज के स्वस्थ बच्चे कल का स्वस्थ भारत है। इनके बेहतर स्वास्थ्य का देश के वकिास, उत्पादकता तथा आर्थकि उन्नतपिर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

### प्रमुख बदिु

- इस सप्ताह के दौरान, महलिा एवं बाल वकिास मंत्रालय के खाद्य और पोषण बोर्ड (Food and Nutrition Board of Ministry of Women & Child Development) द्वारा राज्य/संघ-शासति प्रदेशों के संबंधति वभिागों, राष्ट्रीय संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों के साथ समन्वय करके राज्य/संघ-शासति स्तर पर कार्यशालाओं का आयोजन कयिा जाएगा।
- इसके अतरिक्ति जागरूकता का प्रसार करने हेतु शवरिों का आयोजन तथा नर्दिष्ट वषिय पर पूरे सप्ताह सामुदायकि बैठकों का आयोजन भी कयिा जाएगा।
- इस सप्ताह के दौरान राज्य, ज़लिा एवं गांव स्तर पर भी बहुत सी कार्यशालाओं एवं अन्य बड़ी गतविधियिों का आयोजन कयिा जाएगा।
- बेहतर स्वास्थ्य के लयिे पोषण के महत्त्व पर राज्य/ज़लिा स्तर के अधकिारयिों को संवेदनशील और सक्षम बनाने के लयिे एक दनि की कार्यशाला का भी आयोजन कयिा जाएगा।

### पोषक आहार की महत्ता

- पोषणयुक्त आहार प्राप्त करना न केवल वर्तमान पीढ़ी का अधकिार है, बल्कयिह भावी पीढ़यिों के अस्तत्वि, स्वास्थ्य और वकिास का भी मुद्दा है।
- पोषणयुक्त आहार न मलि पाने के कारण न केवल कम उम्र के बच्चों में मधुमेह एवं हृदय रोग जैसी बीमारयिाँ उत्पन्न होती हैं बल्कउिनमें रोगों से प्रतरिक्षा करने की क्षमता का भी ह्रास होता है।
- परणिामतः कुपोषति बच्चों का मानसकि एवं शारीरकि वकिास अवरुद्ध हो जाता है, जसिका प्रभाव इनके साथ-साथ देश के भवषिय पर भी पड़ता है।

### "माँ" कार्यक्रम

- मंत्रालय द्वारा नवजात शशिुओं के लयिे माँ के दूध की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए स्तनपान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से "माँ" (MAA- Mothers' Absolute Affection) कार्यक्रम शुरू कयिा गया है।
- "माँ" कार्यक्रम के अंतरगत स्तनपान को बढ़ावा देने के लयिे ज़लिा और ब्लॉक स्तर पर कार्यक्रम प्रबंधकों सहति डॉक्टरों, नर्सों और ए.एन.एम. के साथ करीब 3.7 लाख आशा कार्यकर्त्ताओं तथा तकरीबन 82,000 स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं को संवेदनशील बनाया गया है।
- इसके अतरिक्ति 23,000 से ज़्यादा स्वास्थ्य कर्मचारयिों को आई.वाई.सी.एफ. प्रशक्षिण भी प्रदान कयिा गया है।
- साथ ही उपयुक्त स्तनपान परंपराओं के महत्त्व के संबंध में माताओं को संवेदनशील बनाने के लयिे ग्रामीण स्तरों पर आशा कार्यकर्त्ताओं द्वारा 1.49 लाख से अधकि माताओं की बैठकें आयोजति की जा चुकी हैं।
- उल्लेखनीय है कजिन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान कराए जाने से नवजात शशिुओं की मृत्यु में 20 प्रतशित की कमी लाई जा सकती है।
- ऐसे नवजात शशिु जनिहें माँ का दूध नहीं मलि पाता है, उनमें स्तनपान करने वाले बच्चों की तुलना में नमिोनयिा एवं पेचशि होने की संभावना क्रमशः 15 गुना और 11 गुना अधकि होती है।
- इसके अतरिक्ति स्तनपान नहीं करने वाले बच्चों में मधुमेह, मोटापा, एलर्जी, दमा, ल्यूकेमयिा आदहिोने का भी खतरा रहता है।

### चुनौतियाँ

- भारत में युवा बच्चों में कुपोषण एक बड़ी सार्वजनकि स्वास्थ्य समस्या है।
- एन.एफ.एच.एस.-4 (National Family Health Survey 2015-16) में भी महलिाओं और बच्चों की पोषण संबंधी स्थतिकि संबंध में कोई उत्साहजनक सुधार नहीं दर्शाए गए हैं।
- भारत में नवजात शशिुओं की मृत्यु में जहाँ व्यवस्थात्मक कमज़ोरयिाँ उत्तरदायी होती हैं, वहीं दूसरी ओर जन-सामान्य में सामान्य स्वास्थ्य संबंधी जानकारयिों का अभाव भी प्रमुख कारण होता है। उदाहरण के तौर पर, नवजात शशिु के स्वास्थ्य में माँ के दूध की महत्ता; माँ के शरीर में पोषक तत्त्वों की कमी होना, जसिके परणिामस्वरूप स्तनपान करने वाले शशिु को भी पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्त्वों की आपूर्तनिहीं हो पाती है इत्यादि।

### आगे की राह

आमजन में कुपोषण की समस्या केवल स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं पर उनके खर्च न कर सकने की क्षमता का परणिाम भर नहीं है, बल्कयिह देश के वास्तवकि आर्थकि पछिड़ेपन एवं स्वास्थ्य सुवधिाओं के असमान वतिरण का द्योतक है। यदइिस संबंध में अभी कोई प्रभावी कदम नहीं उठाया गया तो इसका परणिाम देश की भावी पीढ़ी को भुगतना होगा। अत: गर्भवती माताओं के भोजन में आवश्यक पोषक तत्त्वों की मौजूदगी सुनश्चिति कयि जाने की आवश्यकता है। साथ ही माँओं द्वारा स्तनपान कराए जाने के संबंध में जागरूकता बढ़ाए जाने पर भी बल देना होगा, ताकस्तिनपान न करने वाले बच्चों में होने वाली बीमारयिों के दुष्परणिामों से बचा जा सके।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/national-nutrition-week